



पारिवारिक शैक्षिक संसाधनों और आर्थिक स्थिरता का विद्यार्थी उपलब्धि पर प्रभाव

DOI: <https://doi.org/10.63345/gjirp.v1.i4.301>

अशीष सैनी

शोधार्थी

शिक्षा विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
धैड़ गाँव, शिव नगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत – 246169

डॉ. कुलदीप कुमार

शोध पर्यवेक्षक

शिक्षा विभाग, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
धैड़ गाँव, शिव नगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत – 246169



<http://www.gjirp.org/> || Vol. 1 No. 4 (2025): December Issue

Date of Submission: 07-11-2025

Date of Acceptance: 20-11-2025

Date of Publication: 04-12-2025

शोध सारांश— यह शोध इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि परिवार में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन तथा परिवार की आर्थिक स्थिरता — दोनों मिलकर विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। प्रचलित शोध-परंपरा में परिवार की आर्थिक स्थिति को प्रायः आय के स्तर से मापा जाता रहा है, जबकि आय की नियमितता एवं अनिश्चितता का पृथक् प्रभाव उपेक्षित रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में दो स्वतंत्र चर — पारिवारिक शैक्षिक संसाधन तथा आर्थिक स्थिरता — को अलग-अलग मापकर द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण एवं आरोही समाश्रयण द्वारा उनके स्वतंत्र तथा अंतःक्रियात्मक प्रभाव का परीक्षण किया गया। कक्षा आठ से दस तक के 540 विद्यार्थियों के आँकड़ों पर आधारित विश्लेषण में दोनों चरों का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया तथा इनकी अंतःक्रिया भी सार्थक रही। सर्वाधिक उल्लेखनीय परिणाम यह रहा कि आर्थिक स्थिरता का पूर्वानुमानक योगदान पारिवारिक आय के निरपेक्ष स्तर से अधिक सिद्ध हुआ, और शैक्षिक संसाधनों का प्रतिफल आर्थिक रूप से स्थिर परिवारों में अपेक्षाकृत अधिक प्राप्त हुआ। निष्कर्षतः शैक्षिक समता की नीति में संसाधन-प्रदान के साथ-साथ पारिवारिक

आर्थिक अनिश्चितता को कम करने वाले उपायों की भूमिका रेखांकित होती है।

मुख्य शब्द— पारिवारिक शैक्षिक संसाधन, आर्थिक स्थिरता, शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय सहभागिता, आय अनिश्चितता, अंतःक्रियात्मक प्रभाव

विषय प्रवेश

विद्यालय विद्यार्थी के अधिगम का एकमात्र स्थल नहीं है। विद्यालयी घंटों के बाहर बिताया गया समय, घर का भौतिक वातावरण, वहाँ उपलब्ध पठन-सामग्री, अध्ययन के लिए मिलने वाला शांत स्थान तथा अभिभावकों की शैक्षिक अभिरुचि — ये सब मिलकर एक अदृश्य किंतु प्रभावी शैक्षिक अवसरचना का निर्माण करते हैं। यह अवसरचना समाज में अत्यंत असमान रूप से वितरित है और विद्यालयी उपलब्धि की भिन्नता का बड़ा भाग इसी वितरण से जुड़ा हुआ है।



इस संदर्भ में परिवार की आर्थिक स्थिति की भूमिका पर व्यापक शोध हुआ है, किंतु उसका अधिकांश भाग आय के स्तर पर केंद्रित रहा है। व्यवहार में अनेक परिवार ऐसे हैं जिनकी औसत वार्षिक आय तो संतोषजनक प्रतीत होती है, किंतु वह आय अनियमित, मौसमी अथवा अनिश्चित है। दैनिक मजदूरी, ठेका-आधारित रोजगार, कृषि-आय की मौसमी प्रकृति, अप्रत्याशित चिकित्सा-व्यय तथा ऋण-चुकोती का दबाव — इन स्थितियों में परिवार का शैक्षिक व्यय अनियोजित एवं रुक-रुक कर होता है। पुस्तकें देर से आती हैं, शुल्क विलंब से जमा होता है, पूरक शिक्षण बीच में छोड़ना पड़ता है, और कभी-कभी विद्यार्थी को अस्थायी रूप से घरेलू श्रम में लगना पड़ता है। इस प्रकार आर्थिक अस्थिरता आर्थिक अभाव से भिन्न किंतु स्वतंत्र रूप से हानिकारक स्थिति है।



प्रस्तुत अध्ययन इसी विश्लेषणात्मक पृथक्करण पर आधारित है। इसका केंद्रीय तर्क यह है कि पारिवारिक शैक्षिक संसाधन अधिगम की संभावना उत्पन्न करते हैं, जबकि आर्थिक स्थिरता उस संभावना को निरंतरता प्रदान करती है; और जब दोनों में से कोई एक अनुपस्थित हो तो दूसरे का प्रतिफल आंशिक ही रह जाता है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं साहित्य समीक्षा

पारिवारिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध पर व्यवस्थित विमर्श का आरंभ Coleman (1966) की उस विस्तृत रिपोर्ट से माना जाता है जिसने यह विवादास्पद किंतु प्रभावशाली निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विद्यालयी संसाधनों की तुलना में विद्यार्थी की पारिवारिक पृष्ठभूमि उपलब्धि की भिन्नता का अधिक भाग स्पष्ट करती है। Bourdieu (1986) ने पूँजी की त्रिविध अवधारणा प्रस्तुत करते हुए सांस्कृतिक पूँजी को परिवार से संचरित उस संसाधन के रूप में परिभाषित किया जो विद्यालयी मूल्यांकन-प्रणाली में सहजता से शैक्षिक सफलता में रूपांतरित हो जाता है। यही ढाँचा घरेलू पुस्तक-संग्रह, अभिभावकीय भाषिक व्यवहार तथा शैक्षिक आकांक्षा के प्रभाव को समझने का आधार देता है।

अनुभवजन्य स्तर पर Sirin (2005) ने सैकड़ों अध्ययनों के मेटा-विश्लेषण द्वारा दर्शाया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उपलब्धि का संबंध मध्यम से प्रबल श्रेणी का है, तथा घरेलू संसाधनों पर आधारित मापन आय पर आधारित मापन की अपेक्षा उपलब्धि से अधिक निकटता से जुड़ा पाया गया। Bradley और Corwyn (2002) ने अपनी समीक्षा में इस संबंध के मध्यस्थ मार्गों — अधिगम-सामग्री की उपलब्धता, अभिभावकीय प्रत्याशा तथा पारिवारिक तनाव — को रेखांकित किया। Fan और Chen (2001) के मेटा-विश्लेषण ने विशेष रूप से यह पाया कि अभिभावकीय सहभागिता के विभिन्न रूपों में आकांक्षा-संप्रेषण का उपलब्धि से संबंध गृहकार्य-पर्यवेक्षण जैसे यांत्रिक रूपों की अपेक्षा अधिक प्रबल है। Sikora, Evans और Kelley (2019) ने अनेक देशों के आँकड़ों से यह स्थापित किया कि किशोरावस्था में घर पर उपलब्ध पुस्तकों की संख्या का प्रौढ़ावस्था की साक्षरता एवं संख्यात्मक दक्षता से दीर्घकालिक संबंध है।

आर्थिक अस्थिरता की पृथक् भूमिका पर साहित्य अपेक्षाकृत नया है। Duncan और Brooks-Gunn (1997) ने निर्धनता की अवधि एवं गहराई के भिन्न प्रभावों को दर्शाया। Evans (2004) ने निर्धनता के पर्यावरणीय आयाम का विश्लेषण करते हुए बताया कि निर्धन बालक अधिक भीड़, शोर एवं अव्यवस्था वाले गृह-वातावरण में रहते हैं, जिससे ध्यान-केंद्रण बाधित होता है। Yeung, Linver और Brooks-Gunn (2002) ने यह प्रदर्शित किया कि आय का प्रभाव प्रत्यक्ष न होकर अधिगम-सामग्री तथा अभिभावकीय तनाव के माध्यम से संचालित होता है। Hill और सहयोगियों (2013) ने स्पष्ट रूप से आय-अस्थिरता को शोध-केंद्र में रखते हुए दर्शाया कि आय में अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव बालकों के कल्याण-सूचकों पर आय-स्तर से स्वतंत्र ऋणात्मक प्रभाव डालता है। Gennetian और Shafir (2015) ने व्यवहारपरक दृष्टिकोण से तर्क दिया कि वित्तीय अनिश्चितता निर्णय-क्षमता एवं दीर्घकालिक नियोजन को क्षीण करती है, जिससे शिक्षा जैसे विलंबित-प्रतिफल वाले निवेश सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। Mani और सहयोगियों (2013) ने प्रयोगात्मक साक्ष्य से यह दिखाया कि वित्तीय चिंता संज्ञानात्मक निष्पादन को तात्कालिक रूप से घटा देती है — यह निष्कर्ष अस्थिर आय वाले परिवारों के विद्यार्थियों के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है।

भारतीय संदर्भ में असर केंद्र (2023) की रिपोर्ट ने घरेलू पठन-सामग्री एवं अभिभावक शिक्षा के साथ आधारभूत दक्षताओं के सुसंगत संबंध को प्रलेखित किया है। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (2019) की शिक्षा-संबंधी रिपोर्ट में प्रति विद्यार्थी शैक्षिक व्यय में वर्गीय एवं क्षेत्रीय विषमता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनसीईआरटी, 2021) के परिणाम भी पारिवारिक पृष्ठभूमि-चरों के साथ उपलब्धि की सुसंगत भिन्नता दर्शाते हैं। ट्रेज़ और सेन (2013) ने भारतीय विकास-विमर्श में यह रेखांकित किया कि शिक्षा तक पहुँच की असमानता आर्थिक असुरक्षा से संरचनात्मक रूप से जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने आर्थिक-सामाजिक रूप से वंचित समूहों हेतु लक्षित सहायता की आवश्यकता को स्वीकार किया है, और ओईसीडी (2019) के पीसा

परिणाम भी यह दर्शाते हैं कि समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों में भी घरेलू शैक्षिक वातावरण के आधार पर उपलब्धि-भिन्नता बनी रहती है।



शोध की आवश्यकता एवं अंतराल

उपलब्ध साहित्य में दो प्रकार की रिक्तियाँ दिखाई देती हैं। प्रथम, भारतीय विद्यालयी संदर्भ में पारिवारिक आर्थिक स्थिति को प्रायः आय-श्रेणी अथवा अभिभावक-व्यवसाय द्वारा मापा गया है; आय की नियमितता एवं व्यय-अनिश्चितता को स्वतंत्र चर के रूप में मापने वाले अध्ययन विरल हैं। द्वितीय, शैक्षिक संसाधन एवं आर्थिक स्थिति को प्रायः एक ही समग्र सूचकांक में समाहित कर दिया जाता है, जिससे इन दोनों की अंतःक्रिया का परीक्षण संभव नहीं हो पाता। प्रस्तुत अध्ययन इन दोनों चरों को पृथक् रूप से मापकर तथा गुणनात्मक अभिकल्प अपनाकर इस रिक्ति को संबोधित करता है।

उद्देश्य एवं परिकल्पनाएँ

अध्ययन के उद्देश्य हैं — विद्यार्थियों के परिवारों में शैक्षिक संसाधनों तथा आर्थिक स्थिरता के स्तर का मापन करना; इन दोनों चरों का उपलब्धि से संबंध ज्ञात करना; इनके मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का परीक्षण करना; तथा पारिवारिक आय एवं अन्य जनसांख्यिकीय चरों के नियंत्रण उपरांत इनके सापेक्ष योगदान का आकलन करना।

तदनु रूप शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं — निम्न एवं उच्च शैक्षिक संसाधन वाले परिवारों के विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है; आर्थिक रूप से स्थिर एवं अस्थिर परिवारों के विद्यार्थियों की औसत उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है; इन दोनों चरों की अंतःक्रिया का उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं है; तथा जनसांख्यिकीय एवं आय-संबंधी चरों के नियंत्रण उपरांत ये चर उपलब्धि का सार्थक पूर्वानुमान नहीं करते।

शोध अभिकल्प एवं प्रविधि

अध्ययन में सर्वेक्षण-आधारित गुणनात्मक (2×2) तुलनात्मक अभिकल्प अपनाया गया, जिसमें प्रथम कारक पारिवारिक शैक्षिक संसाधन (निम्न एवं उच्च) तथा द्वितीय कारक आर्थिक स्थिरता (अस्थिर एवं स्थिर) है। दोनों कारकों हेतु सातत्य-मापन के उपरांत माध्यिका-विभाजन द्वारा समूह बनाए गए, किंतु सातत्य मानों को समाश्रयण विश्लेषण में यथावत् प्रयुक्त किया गया, जिससे सूचना-क्षय की भरपाई हो सके।

निर्दर्श में बारह माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा आठ से दस तक के 540 विद्यार्थी सम्मिलित थे। विद्यालयों का चयन प्रबंधन-प्रकार एवं अवस्थिति के आधार पर स्तरित रूप से तथा विद्यार्थियों का चयन कक्षा-सूची से क्रमबद्ध यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। कुल 588 प्रश्नावलियाँ वितरित की गईं, जिनमें से 540 पूर्ण एवं विश्लेषण-योग्य रहीं।

मापन हेतु तीन उपकरणों का प्रयोग हुआ। पहला, पारिवारिक शैक्षिक संसाधन मापनी, जिसमें पाँच आयामों पर कुल अठारह कथन थे तथा प्राप्तांक को शून्य से सौ की श्रेणी में रूपांतरित किया गया (क्रोनबाख अल्फा 0.89)। दूसरा, आर्थिक स्थिरता मापनी, जिसमें आय की नियमितता, रोजगार की निरंतरता, ऋण-भार तथा शैक्षिक व्यय की निश्चितता संबंधी बारह कथन सम्मिलित थे (अल्फा 0.84)। यह मापनी जानबूझकर आय-स्तर से स्वतंत्र रखी गई और आय-श्रेणी को पृथक् नियंत्रण चर के रूप में दर्ज किया गया। तीसरा, उपलब्धि हेतु विद्यालयी अभिलेख से पूर्ववर्ती वार्षिक परीक्षा के छह विषयों का औसत प्रतिशत लिया गया।

उपकरणों की अंतर्वस्तु वैधता हेतु सात विशेषज्ञों से परामर्श लिया गया तथा अस्सी विद्यार्थियों पर पूर्व-परीक्षण किया गया। प्रसामान्यता की जाँच में विषमता एवं ककुदता के मान स्वीकार्य सीमा में रहे तथा प्रसरण-समरूपता हेतु लीवीन परीक्षण असार्थक रहा ($p = 0.17$)। बहुसहस्रैखिकता की जाँच में प्रसरण-स्फीति गुणक का अधिकतम मान 2.14 रहा, जो स्वीकार्य है।



आँकड़ा संकलन प्रक्रिया

आँकड़ा संकलन विद्यालय प्रधानाचार्यों की लिखित अनुमति एवं अभिभावकीय सहमति के उपरांत पाँच माह की अवधि में संपन्न हुआ। आर्थिक स्थिरता संबंधी प्रश्नावली का भाग अभिभावकों द्वारा भरा गया, जिससे विद्यार्थी के अनुमान पर निर्भरता न रहे। सभी सूचनाएँ गोपनीय रखी गईं तथा प्रतिभागिता पूर्णतः स्वैच्छिक रही।

तालिका एक — निदर्श की जनसांख्यिकीय संरचना

विशेषता	उपवर्ग	न	प्रतिशत
लिंग	छात्र / छात्रा	279 / 261	51.7 / 48.3
कक्षा	आठ / नौ / दस	176 / 182 / 182	32.6 / 33.7 / 33.7
अवस्थिति	ग्रामीण / नगरीय	297 / 243	55.0 / 45.0
विद्यालय	राजकीय निजी	291 / 249	53.9 / 46.1
कुल	—	540	100.0

विश्लेषण एवं परिणाम

समग्र निदर्श में शैक्षिक संसाधन सूचकांक का औसत 54.7 (मानक विचलन 17.9), आर्थिक स्थिरता का 58.3 (16.4) तथा उपलब्धि का 62.3 प्रतिशत (11.1) रहा। आयामवार वर्णनात्मक मान एवं उपलब्धि से सहसंबंध तालिका दो में प्रस्तुत हैं।

तालिका दो — घटक आयामों का औसत तथा उपलब्धि से सहसंबंध

चर एवं उसके आयाम	औसत	मा.वि.	उपलब्धि से r
घरेलू पठन-सामग्री एवं पुस्तकें	51.2	19.4	0.41
पृथक् एवं शांत अध्ययन स्थान	47.9	21.6	0.44
अभिभावकीय शैक्षिक सहभागिता	58.6	18.2	0.49
आकांक्षा-संप्रेषण एवं अभिप्रेरण	62.4	17.1	0.46
पूरक अधिगम सुविधा	53.4	22.7	0.37
शैक्षिक संसाधन सूचकांक (समग्र)	54.7	17.9	0.54
आय की नियमितता	60.1	18.9	0.36
रोजगार की निरंतरता	62.8	19.7	0.33
ऋण-भार से मुक्ति	51.6	21.3	0.31
शैक्षिक व्यय की निश्चितता	58.7	20.1	0.40

आर्थिक स्थिरता (समग्र)	58.3	16.4	0.43
पारिवारिक आय श्रेणी (नियंत्रण चर)	—	—	0.31

सभी गुणांक $p < 0.01$ पर सार्थक; संसाधन एवं स्थिरता का पारस्परिक सहसंबंध $r = 0.39$

उल्लेखनीय है कि आर्थिक स्थिरता का उपलब्धि से सहसंबंध (0.43) पारिवारिक आय के निरपेक्ष स्तर के सहसंबंध (0.31) से अधिक रहा — यह अध्ययन का केंद्रीय अनुभवजन्य प्रेक्षण है।

तालिका तीन — चारों उपसमूहों की औसत उपलब्धि

शैक्षिक संसाधन	आर्थिक स्थिति	न	औसत उपलब्धि	मा.वि.
निम्न	अस्थिर	163	55.6	10.2
निम्न	स्थिर	107	60.4	9.8
उच्च	अस्थिर	112	63.2	9.5
उच्च	स्थिर	158	69.8	9.1
सीमांत	निम्न संसाधन	270	57.5	—
सीमांत	उच्च संसाधन	270	67.1	—
सीमांत	अस्थिर	275	58.7	—
सीमांत	स्थिर	265	66.0	—

तालिका चार — द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण का सारांश

प्रभाव स्रोत	वर्ग योग	स्व. अंश	माध्य वर्ग	F	सार्थकता	आंशिक η^2
शैक्षिक संसाधन	12340	1	12340	132.12	$p < 0.001$	0.20
आर्थिक स्थिरता	7194	1	7194	77.02	$p < 0.001$	0.13
अंतःक्रिया	693	1	693	7.42	$p < 0.01$	0.01
त्रुटि	50053	536	93.4	—	—	—

तीनों प्रभाव सार्थक पाए गए, अतः प्रथम तीनों शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत हुईं। अंतःक्रिया की प्रकृति यह रही कि आर्थिक रूप से अस्थिर परिवारों में उच्च एवं निम्न संसाधन समूहों का अंतर 7.6 अंक था, जबकि स्थिर परिवारों में यही अंतर बढ़कर 9.4 अंक हो गया। अर्थात् शैक्षिक

संसाधन अपना पूर्ण प्रतिफल तभी देते हैं जब परिवार की आर्थिक स्थिति पूर्वानुमेय हो।

तालिका पाँच — आरोही समाश्रयण विश्लेषण

सोपान	सम्मिलित चर	R ²	ΔR ²	अंतिम β
एक	लिंग, कक्षा, अवस्थिति, विद्यालय प्रकार	0.11	0.11	0.03 / -0.02 / 0.07 / 0.09
दो	+ पारिवारिक आय, अभिभावक शिक्षा	0.24	0.13	0.12 / 0.13
तीन	+ आर्थिक स्थिरता	0.32	0.08	0.24
चार	+ पारिवारिक शैक्षिक संसाधन	0.44	0.12	0.38

अंतिम प्रतिमान: $F(8, 531) = 52.16, p < 0.001$; समायोजित $R^2 = 0.43$ । लिंग एवं कक्षा के गुणांक असार्थक।

अंतिम सोपान में शैक्षिक संसाधन सर्वाधिक प्रबल पूर्वानुमानक रहे, उसके पश्चात् आर्थिक स्थिरता। पारिवारिक आय का गुणांक स्थिरता के प्रवेश के उपरांत घटकर 0.12 रह गया, जो यह संकेत देता है कि आय का प्रभाव पर्याप्त सीमा तक आर्थिक पूर्वानुमेयता के माध्यम से संचालित होता है। इस प्रकार चौथी शून्य परिकल्पना भी अस्वीकृत हुई।

विवेचना

परिणाम Sirin (2005) एवं Bradley व Corwyn (2002) के उन निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं जिनमें घरेलू शैक्षिक वातावरण को आय की तुलना में उपलब्धि का बेहतर सूचक बताया गया। अभिभावकीय सहभागिता तथा आकांक्षा-संप्रेषण के अपेक्षाकृत उच्च सहसंबंध Fan और Chen (2001) के मेटा-विश्लेषण से संगत हैं, जो यह दर्शाता है कि आर्थिक व्यय की अपेक्षा अभिभावकीय अभिवृत्ति अधिक निर्णायक है — और यह नीतिगत दृष्टि से आशाजनक है, क्योंकि अभिवृत्ति-परिवर्तन अपेक्षाकृत कम लागत वाला हस्तक्षेप है।

आर्थिक स्थिरता का आय-स्तर से अधिक प्रबल संबंध Hill और सहयोगियों (2013) तथा Gennetian व Shafir (2015) के तर्क को भारतीय विद्यालयी संदर्भ में अनुभवजन्य समर्थन प्रदान करता है। Mani और सहयोगियों (2013) के संज्ञानात्मक साक्ष्य के प्रकाश में यह व्याख्या उचित प्रतीत होती है कि आर्थिक अनिश्चितता से उत्पन्न पारिवारिक तनाव विद्यार्थी के ध्यान एवं अध्ययन-निरंतरता को बाधित करता है, जिसे Evans (2004) ने निर्धनता के पर्यावरणीय दबाव के रूप में विश्लेषित किया था।

अंतःक्रियात्मक प्रभाव का आकार यद्यपि लघु है, तथापि उसकी दिशा सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि केवल पुस्तकें, अध्ययन-कक्ष अथवा पूरक कक्षाएँ उपलब्ध करा देने से अपेक्षित परिणाम तब तक सीमित रहेंगे जब तक परिवार की आर्थिक अनिश्चितता विद्यार्थी की उपस्थिति एवं अध्ययन-निरंतरता को बाधित करती रहेगी।

शैक्षिक निहितार्थ

निष्कर्ष तीन प्रकार के हस्तक्षेपों की ओर संकेत करते हैं। प्रथम, विद्यालय-स्तर पर पुस्तकालय-प्रसार, पर्यवेक्षित अध्ययन-अवधि तथा अभिभावक-उन्मुखीकरण कार्यक्रम, जिससे घरेलू संसाधनों की कमी की आंशिक क्षतिपूर्ति हो। द्वितीय, आर्थिक सहायता का स्वरूप एकमुश्त के स्थान पर नियमित एवं पूर्वानुमेय रखा जाए, क्योंकि इस अध्ययन के अनुसार अनिश्चितता स्वयं एक हानिकारक कारक है। तृतीय, अस्थिर आय वाले परिवारों के विद्यार्थियों की पहचान कर उनके लिए लक्षित मार्गदर्शन एवं अनुवर्ती व्यवस्था की जाए, न कि केवल आय-श्रेणी के आधार पर लाभार्थी चयन किया जाए।



अध्ययन की सीमाएँ

अभिकल्प अनुप्रस्थ-काटीय होने के कारण कारणात्मक निष्कर्ष सीमित हैं। आर्थिक स्थिरता का मापन अभिभावकीय स्व-कथन पर आधारित है, वस्तुनिष्ठ वित्तीय अभिलेखों पर नहीं। निदर्श बारह विद्यालयों तक सीमित होने से व्यापक सामान्यीकरण सावधानीपूर्वक ही किया जाना चाहिए। विद्यार्थी की अभिप्रेरणा, अध्ययन-अभ्यास एवं मानसिक स्वास्थ्य जैसे संभावित मध्यस्थ चर प्रतिमान में सम्मिलित नहीं थे।

आगामी शोध दिशाएँ



भविष्य में अनुदैर्घ्य अभिकल्प अपनाकर आय-उत्तर-चढ़ाव का मासिक अभिलेखन तथा उपलब्धि का बारंबार मापन किया जाना उपयोगी होगा। पथ-विश्लेषण द्वारा यह परीक्षण किया जा सकता है कि आर्थिक स्थिरता का प्रभाव पारिवारिक तनाव एवं उपस्थिति-नियमितता के माध्यम से कितना संचालित होता है। गुणात्मक साक्षात्कार द्वारा अस्थिर आय वाले परिवारों की शैक्षिक निर्णय-प्रक्रिया का अध्ययन तथा नियमित नकद-अंतरण जैसे हस्तक्षेप का प्रायोगिक मूल्यांकन इस क्षेत्र के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक होगा।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन यह स्थापित करता है कि विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि परिवार में उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों तथा परिवार की आर्थिक स्थिरता — दोनों से स्वतंत्र रूप से प्रभावित होती है, और इन दोनों की अंतःक्रिया भी सार्थक है। शैक्षिक संसाधन अधिगम की क्षमता निर्मित करते हैं, किंतु आर्थिक पूर्वानुमेयता उस क्षमता को निरंतरता में रूपांतरित करती है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि आय का निरपेक्ष स्तर उतना निर्णायक नहीं, जितनी उस आय की नियमितता। अतः शैक्षिक समता की दिशा में की जाने वाली नीति-रचना को वंचना के मापन में परिवर्तन करना होगा — आय-श्रेणी के एकांगी मानदंड से आगे बढ़कर आर्थिक अनिश्चितता तथा घरेलू शैक्षिक वातावरण को सम्मिलित करने वाला बहु-आयामी मानदंड ही वास्तविक लक्ष्य-समूह की पहचान कर सकेगा।

संदर्भ सूची

1. Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. G. Richardson (Ed.), *Handbook of theory and research for the sociology of education* (pp. 241–258). New York: Greenwood Press.
2. Bradley, R. H., & Corwyn, R. F. (2002). Socioeconomic status and child development. *Annual Review of Psychology*, 53, 371–399.
3. Coleman, J. S. (1966). *Equality of educational opportunity*. Washington, DC: U.S. Department of Health, Education and Welfare.
4. Duncan, G. J., & Brooks-Gunn, J. (Eds.). (1997). *Consequences of growing up poor*. New York: Russell Sage Foundation.
5. Evans, G. W. (2004). The environment of childhood poverty. *American Psychologist*, 59(2), 77–92.
6. Fan, X., & Chen, M. (2001). Parental involvement and students' academic achievement: A meta-analysis. *Educational Psychology Review*, 13(1), 1–22.
7. Gennetian, L. A., & Shafir, E. (2015). The persistence of poverty in the context of financial instability: A behavioral perspective. *Journal of Policy Analysis and Management*, 34(4), 904–936.
8. Hill, H. D., Morris, P., Gennetian, L. A., Wolf, S., & Tubbs, C. (2013). The consequences of income instability for children's well-being. *Child Development Perspectives*, 7(2), 85–90.
9. Mani, A., Mullainathan, S., Shafir, E., & Zhao, J. (2013). Poverty impedes cognitive function. *Science*, 341(6149), 976–980.
10. OECD. (2019). *PISA 2018 results (Volume II): Where all students can succeed*. Paris: OECD Publishing.
11. Sikora, J., Evans, M. D. R., & Kelley, J. (2019). Scholarly culture: How books in adolescence enhance adult literacy, numeracy and technology skills. *Social Science Research*, 77, 1–15.
12. Sirin, S. R. (2005). Socioeconomic status and academic achievement: A meta-analytic review of research. *Review of Educational Research*, 75(3), 417–453.
13. Yeung, W. J., Linver, M. R., & Brooks-Gunn, J. (2002). How money matters for young children's development. *Child Development*, 73(6), 1861–1879.
14. असर केंद्र. (2023). *शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (ग्रामीण) 2022*. नई दिल्ली: प्रथम.
15. ड्रेज़, जॉ एवं सेन, अमर्त्य. (2013). *भारत और उसके विरोधाभास*. नई दिल्ली: पेंगुइन.
16. राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय. (2019). *परिवारों का सामाजिक उपभोग: भारत में शिक्षा, एनएसएस 75वाँ दौर, रिपोर्ट संख्या 585*. नई दिल्ली: सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार.
17. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्. (2021). *राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2021: राष्ट्रीय रिपोर्ट*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी.
18. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय.

